● **पढ़ो, समझो और बताओ :**

७. बादलों की काव्य सृष्टि

–आचार्य काका कालेलकर

जन्म : १ दिसंबर १८८५, सातारा (महाराष्ट्र) **मृत्यु :** २१ अगस्त १९८१ **रचनाएँ :** स्मरण–यात्रा, धर्मोदय, हिमालयनो प्रवास, लोकमाता, जीवननो आनंद, अवरनावर **परिचय :** आचार्य कालेलकर जी प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, पत्रकार और स्वतंत्रता संग्राम के विख्यात सेनानी थे । प्रस्तुत निबंध के माध्यम से काका कालेलकर जी ने हमें पहाड़ों एवं बादलों के सौंदर्य से अवगत कराया है ।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि तुम बादल बन जाओ तो ....

कहाँ जाओगे ?

क्या करोगे ?

5R0BG1

आकाश के बादलों का वर्णन और काव्य जितना वैज्ञानिकों ने किया है उतना कवियों ने शायद ही किया होगा । अगर किया हो तो मेरी नजर में नहीं आया । किसी भी देश के कवि को ले लीजिए । बादलों की शोभा से वे आकर्षित तो होते ही हैं । कुदरत का वर्णन करते हुए वे कभी बादलों को नहीं भूलते लेकिन बादलों का नाम लिया, दो–चार शब्दों में उनका वर्णन किया तो उनके मन में बादलों का तर्पण यथेष्ट हो गया । बादलों को रूई की उपमा दी, सफेद ऊन की उपमा दी या कभी कुमकुम की उपमा दी तो पूरा हो गया । सच्चे बादल–प्रेमियों को इससे संतोष कैसे होगा ?

मेरे बचपन में जब हम विज्ञान पढ़ते थे तब बादलों के चार मुख्य विभाग बताए जाते थे । ये चारों किस्म के बादल आसानी से पहचाने जाते हैं । लेकिन आज जलवायु के शास्त्र के साथ बादलों का विज्ञान भी बहुत कुछ बढ़ गया है और बादलों के असंख्य प्रकार, उनकी खूबियाँ और उनके नाम सबका विस्तार इतना बढ़ा है कि प्रकृति प्रेमी कवि कहीं के कहीं पिछड़ गए हैं । हमारे प्राचीन कवि काले–श्याम बादलों को राक्षसों की उपमा देते थे । नव जलधर को देखते ही उन्हें दृप्त निशाचर का भ्रम होता था । जलराशि के भार से 'भूरि विलंबिनो घनो' को देखकर उन्हें परोपकारी सज्जनों की नम्रता याद आती थी । 'भडली वाक्य' की रचना करने वाले सहदेव के शिष्य किसान या खलासी लोग बादलों का जितना निरीक्षण करते थे उतना कवियों ने किया हो तो वह अभी तक हमारे सामने आया ही नहीं है ।

हमारे कवियों ने छहों ऋतुओं के कितने–कितने सुंदर वर्णन किए हैं किंतु छहों ऋतुओं के बादलों की अलग–अलग शोभा उन्होंने क्यों नहीं दी ?

उषा काल के बादल, सूर्योदय के बादल, दोपहर के निराग्रही, अनासक्त बादल, संध्या के उज्ज्वल और विलासी बादल और रात के राक्षसों जैसे बादल इनका अलग–अलग वर्णन, वर्णन तो क्या व्यक्ति परिचय हमें

❑ किसी एक परिच्छेद का आदर्श वाचन करें । मुखर एवं शुद्ध वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ के सभी मुद्दों को स्पष्ट करें । अंतरजाल/पुस्तकालय के माध्यम से 'बादलों' के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करें ।

मिलता है । पूर्णिमा के दिन चंद्र के साथ खेल करने वाले बादल और द्‌वितीया के चंद्र की शोभा बढ़ाने वाले बादल एक से नहीं होते । बारिश के दिनों में सारे आकाश पर अपना साम्राज्य जमाकर अनंत आकाश को संकुचित करने वाले बादल जुदे और सारे क्षितिज पर अपना व्यवस्थित वलय फैलाकर आकाश के नीले गुंबद की अखंड शोभा बढ़ाने वाले बादल जुदे ।

हिमालय जैसे पहाड़ों के शिखर पर सवार न होते हुए शिखर के नीचे फैलकर शिखर को स्वर्गीय उन्नति देने वाले बादल अलग और उन्हीं शिखरों की शोभा सस्ती न बने इसलिए उनके सामने परदा खड़ा करने वाले बादल अलग । अगर कोई माने कि समुद्र के ऊपर के बादल और रेगिस्तान के ऊपर के बादल एक ही किस्म के होते हैं तो कहना पड़ेगा कि ऐसे लोगों ने बादलों का निरीक्षण ही नहीं किया ।

जिन ऋतुओं में आकाश के वायु या पवन सैकड़ों मील सीधे दौड़ते हैं उन ऋतुओं में हाथ के पंजे की उँगलियों के जैसे बादलों के पंखे क्षितिज पर आमने-सामने दीख पड़ते हैं । कभी दक्षिणोत्तर तो कभी पूर्व-पश्चिम । वास्तव में आकाश में ऐसे पंखे नहीं होते । लेकिन वह एक प्रकार का दृष्टिभ्रम है । रेल की सीधी पटरियाँ दूर जाते एकत्र मिलती-सी दीख पड़ती हैं, वैसा ही यह दृष्टिभ्रम है ।

हम पहले से मानते और कहते आए हैं कि बादलों का क्षेत्र अनंत है । लेकिन हमें उन क्षेत्रों की पूरी कल्पना नहीं थी । वह तो हमारी पृथ्वी पर खड़े होकर आकाश की ओर ताकने से बनी हुई मर्यादित कल्पना थी । कभी-कभी पहाड़ की चोटी पर से नीचे की ओर फैली हुई घाटियों की तरफ देखने से बादलों की सारी शोभा नई ही बन जाती है । पुणे के पास सिंहगढ़ के पहाड़ी किले पर मैं काफी रहा हूँ । वहाँ पहाड़ पर से कच्चे बादल दौड़ते दीखते थे। नीचे की खीण (घाटी) में

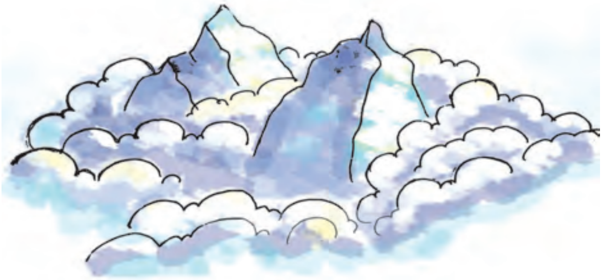

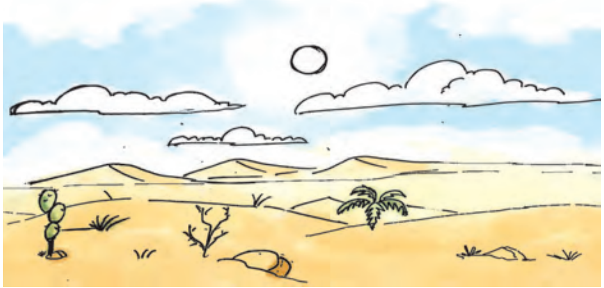

कायोत्सर्ग करके कूद पड़ते थे तब उनकी वीरता देखकर मैं दंग रह जाता था । इससे उलटा जब हिमालय की घाटियों में रात को सोए हुए बादल सुबह आठ नौ बजे के बाद आँखें मलते-मलते उठते थे और धीरे-धीरे आकाश में ऊँचे जाकर उत्तर की यात्रा के लिए प्रस्तुत हो जाते थे तब मैं बादलों के राष्ट्रों का इतिहास समझने की कोशिश करता था ।

जब हवाई जहाज में बैठकर हम पृथ्वी को छोड़ सकें और बादलों को बींधकर उनके भी ऊपर जा सकें तब तो सारी दृष्टि ही बदल गई । जब पृथ्वी छोड़कर मनुष्य बादलों को भी ऊपर से देखता है, तब तो अभूतपूर्व या अदृष्टपूर्व विस्तार उसे देखने को मिलता है । सैकड़ों मील तक फैले हुए बादलों के पहाड़ उनके उत्तुंग शिखर और बीच की घाटियाँ, यह सब देखकर मनुष्य कहने लगता है कि 'पिछली जिंदगी में हमने ऐसे नजारे की कल्पना भी नहीं की थी।'

इन व्योम काव्यों में इंद्रधनुष भी होते हैं, उभयसंध्या की शोभा भी होती है । बादलों के अंदर अथवा बादलों से बने हुए रेगिस्तान भी देखने को मिलते हैं और बीच-बीच में छोटे-मोटे सरोवर भी बनते हैं । सचमुच पृथ्वी की उदारता से वातावरण को जो बादल मिलते हैं उनके लिए सूर्य की किरणों के प्रति हमें कृतज्ञ होना चाहिए ।

❑ पाठ में आए विशेष संदर्भों के बारे में पुस्तकालय एवं अंतरजाल से जानकारी प्राप्त करके कक्षा में सुनाने के लिए विद्‌यार्थियों को प्रेरित करें । 'बादल बनने की प्रक्रिया' का वर्णन करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें ।

सुनो तो जरा

आकाशवाणी, ई न्यूज, दूरदर्शन से खेल संबंधी समाचार सुनो और सुनाओ ।

सूर्य की किरण, आकाश की पवन और पहाड़ों के प्रतिबंध सबके सहयोग से बादलों की सृष्टि पैदा होती है और एक विशाल यज्ञ चक्र चलता रहता है । समुद्र का पानी बादल के रूप में आकाश में चढ़ता है और बारिश के रूप में समुद्र के पास पहुँच जाता है । बादलों में फटे हुए बादल बड़े सुहावने लगते हैं । बादलों के पुंज के ढेर जब बनते हैं तब तो वे बर्फ के पहाड़ों के जैसे भव्य और स्वर्गीय दीख पड़ते ही हैं लेकिन केवल घने बादल शायद ही विशेष शोभास्पद होते हैं ।

जिंदगी में हिमाच्छादित शिखर पहली बार देखने से ऐसी धन्यता हुई कि आयुष्य में इस दिन का महत्त्व दृढ़ करने के लिए मैंने उस दिन अपनी छोटी-सी वासरी में उसका विशेष जिक्र किया था । विशालकाय सफेद-सफेद शिखर देखकर ही मैं तृप्त और मस्त हुआ था लेकिन देखा कि वे भव्य पहाड़ भी अपने ढंग का नखरा कर सकते हैं । जब सूरज पश्चिम की ओर ढल पड़ा तब शिखरों के रंग कुछ फीके-पीले-से हो गए । अब वे पहले से ज्यादा मोहक होने लगे । बर्फ के रंग देखते-देखते ऐसे बदलने लगे कि एक क्षण के लिए भी नजर उनपर से हटना कोई अजीब सुंदरता खोने जैसा था और कितना आश्चर्य कि इतनी विलक्षण चंचलता का प्रत्यक्ष साक्षात्कार होते हुए भी पहाड़ के चेहरे पर की गंभीरता याकाचित भी नष्ट नहीं होती थी ।

एक जगह खड़े रहने पर हिमालय के अनेकानेक शिखरों की एक पंक्ति उत्तर की ओर जब प्रकट होती है तब उसकी शोभा और उसकी भव्यता तो अवर्णनीय है ही । इससे भी अधिक ऊँचे जाकर जब नजर के सामने बीस-पचीस मील के प्रदेशों में शिखरों का बैठा हुआ सम्मेलन दीख पड़ता है तब वह भव्यता गौण होती है और विराट की समृद्धि ही हृदय को दबा देती है ।

हिमालय के बर्फीले पहाड़ों के ये जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक दर्शन हुए उनका स्मरण और वह अनुभव वर्षों तक चला । नैनीताल, अल्मोड़ा होकर कौसानी, वहाँ से उत्तर की ओर हिमालय तक सुदीर्घ, प्रदीर्घ, अनवरत शिखर माला दीख पड़ती है ।

ये शिखर हैं अत्यंत शीतल । उनका दर्शन भी उपशमप्रेरक, शांत, शीतल ही है । लेकिन एक तो इनका दर्शन निरंतर नहीं हो सकता और जब होता है तब ऐसे उत्कट और जीवन समृद्ध भावों को वे जागृत करते हैं कि उनका दर्शन ध्यान के लिए नहीं किंतु कवि की प्रतिभा के लिए ही पोषक है । जिस तरह एकरूप बादलों में भी अनंत और अकूत विविधता भरी रहती है उसी तरह इन कर्पूरगौर हिमशिखरों में भी केवल आकृति की नहीं, रंगों की छटा ही नहीं किंतु भावोत्कटता की भी अमर्याद विविधता होती है । जीवन के विविध और समृद्ध अनुभवों को जागृत करके उनका नवनीत निकालने के लिए इन शिखरों का दर्शन, स्मरण और चिंतन हर तरह से उपकारक हैं ।

- ‘बादल की आत्मकथा’ इस विषय पर दस-पंद्रह वाक्यों में निबंध लिखने के लिए कहें । पाठ में वर्णित विविध बादलों के चित्र बनाने के लिए प्रेरित करें । इंद्रधनुष के मूल रंग और उनसे बनने वाले रंगों के नाम लिखवाएँ ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

कुदरत = प्रकृति	**उत्तुंग** = ऊँचे
यथेष्ट = पर्याप्त	**याकाचित** = कभी
जलधर = बादल	**उपशम** = इच्छा
दृप्त = प्रचंड	**वासरी** = छोटा घर
जुदे (जुदा) = अलग	**उत्कट** = तीव्र
वलय = घेरा	**अकूत** = अत्यधिक
अनंत = अंतहीन	**अमर्याद** = असीम

स्वयं अध्ययन

मच्छरों के कारण फैलने वाले रोगों के संदर्भ में वैज्ञानिक जानकारी अंतरजाल/पुस्तकालय से प्राप्त करो और बताओ :

- रोग का नाम
- लक्षण
- उपाय

मेरी कलम से

जागतिक तापमान वृद्धि के कारण, इनपर होने वाले परिणाम ढूँढ़ो और चार्ट बनाओ :

- मानव
- जंगल
- जलस्रोत

बताओ तो सही

जब तुम बीमार होते हो तो उस समय घर के सदस्यों का तुम्हारे साथ होने वाला व्यवहार बताओ ।

- बहन-भाई
- दादी जी-दादा जी
- नाना जी-नानी जी
- माता-पिता

वाचन जगत से

माता-पिता के भ्रमणध्वनि पर संदेश आया है तो तुम क्या करोगे ?

अध्ययन कौशल

किसी समाजोपयोगी कार्यक्रम का वर्णन करने वाली टिप्पणी बनाओ/तैयार करो :

- कार्यक्रम का नाम
- दिन, समय, आयोजक
- प्रमुख अतिथि
- विशेष कार्यक्रम

खोजबीन

पिछले दो वर्षों के गर्मी के महीनों का तापमान ज्ञात करो और संयुक्त स्तंभालेख बनाओ ।

गणित सातवीं कक्षा पृष्ठ ५१-५२

※ **इस अर्थ में प्रयुक्त हुए शब्द पाठ में ढूँढ़कर लिखो :**

(क) वसुंधरा = ... (ग) गिरि = ... (च) व्योम = ...

(ख) अनिल = ... (घ) संतुष्टि = ... (छ) उग्र/प्रचंड = ...

सदैव ध्यान में रखो

पर्यावरण शुद्ध रखना प्रत्येक की जिम्मेदारी है ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो और मोटे अक्षरों में छपे शब्दों को समझो ।

१. **हिमालय** देश का गौरव है ।

२. **परिश्रम** सफलता की कुंजी है ।

३. **निखिल** कश्मीर घूमने गया था ।

४. **मुंबई** देश की आर्थिक राजधानी है ।

५. **महासागर** अपने देश के चरण पखारता है ।

६. **दादी जी को** व्यंजन अच्छे लगते हैं ।

ऊपर के वाक्यों में **हिमालय, परिश्रम, निखिल, मुंबई, महासागर , दादी जी** इनके बारे में कहा गया है । वाक्य में जिसके बारे में कहा या बताया जाता है वह **उद्‌देश्य** होता है ।

ऊपर के वाक्यों में हिमालय के बारे में- **देश का गौरव है,** परिश्रम के बारे में-**सफलता की कुंजी है-** निखिल के बारे में- **कश्मीर घूमने गया था,** मुंबई के बारे में-**देश की आर्थिक राजधानी है,** महासागर के बारे में- **अपने देश के चरण पखारता है,** दादी जी के बारे में- **व्यंजन अच्छे लगते हैं,** कहा गया है । उद्‌देश्य के बारे में जो कहा गया है वह **विधेय** होता है ।

※ निम्न शब्दों का सही क्रम लगाकर वाक्य बनाओ तथा **उद्‌देश्य** और **विधेय** अलग करके तालिका में लिखो :

१. के उत्तर भारत है हिमालय में ।

२. पेड़ रही हैं चींटियाँ चढ़ पर ।

३. होने धीरे-धीरे लगा उजाला ।

४. टिड्डियों साफ ने दिया कर दल पूरा खेत के ।

५. जाती सजीव है पाई पृथ्वी सृष्टि पर ।

६. सुंदर बनाया चित्र ने मृदुल ।

सही वाक्य	उद्‌देश्य	विधेय
१.		
२.		
३.		
४.		
५.		
६.		